eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

संत कबीर : चिन्तन के विविध आयाम

[1]डॉ. संज्ञा सिंह
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी, स्व0 श्यामता प्रसाद चौधरी महिला महा0, खरगौराबस्ती कटरा–श्रावस्ती

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

सन्तमत के समस्त कवियों में कबीर सबसे अधिक प्रतिभाशाली और मौलिक थे। यद्यपि वे सामान्य अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा है : ''मासि कागद छुयौ नहीं कलम गह्यो नहि हाथ।'' तात्पर्य है कि वे पढ़े लिखे नहीं थे, न उन्हें पिंगल और अलंकारों का ज्ञान था, तथापि उनमें काव्यानुभूति इतनी प्रबल एवं उत्कृष्ट थी कि वे महाकवि कहलाने के अधिकारी हैं। उनकी कविता में छन्द अलंकार, शब्द–शक्ति आदि गौण है और संदेश देने की प्रवृत्ति प्रधान है कबीर भावना की अनुभूति से युक्त, उत्कृष्ट रहस्यवादी, जीवन का संवेदनशील संस्पर्श करने वाले और मर्यादा के रक्षक कवि थे। उन्होंने स्वतः कहा कि : ''तुम जिन जानो गीत हैं, यह निज ब्रम्हा विचार।'' पथभ्रष्ट समाज को राह पर लाना ही उनका प्रधान लक्ष्य है। उन्होनें ज्ञान भक्ति वैराग्य योग, हठयोग आदि विषयों को सुबोध रूप में व्यक्त कर दिया है। आत्मा परमात्मा जीव जगत आदि का विवेचन नीरस विषय है परन्तु कबीर ने इसे भावमयी अनुभूतियों कल्पना और सरल भाषा से सरस बना दिया है। सतगुरू को अंग, माया को अंग, चेतावनी को अंग आदि प्रसंगों में कवि की कल्पना–शक्ति का वैभव दर्शनीय है।

बीज शब्द– उत्कृष्ट, संवेदनशील, पथभ्रष्ट, वैराग्य, रहस्यवादी, कल्पना–शक्ति, अनुभूति।

Introduction

कबीर साहित्य में जहां दर्शन, अध्यात्म, ज्ञान, वैराग्य की गूढ़ता मिलती है, वहीं उनके साहित्य में समाज सुधार का शंखनाद भी है। वह दार्शनिक होने के साथ–साथ समाज सुधारक भी थे। समाज सुधार अर्थात् जन–जीवन का उत्थान कबीर के जीवन की साधना थी। उन्होंने भक्ति के आडम्बरों पर चोट की, वहीं अंधविश्वासों रूढ़ियों, कुप्रथा पर भी निर्भीकता से लिखा। कबीर कवि होने के साथ ही साधक थे, दार्शनिक थे, तत्वान्वेषी थे, भक्त और ज्ञानी थे। वस्तुतः कबीर का जीवन उच्चतम मानवीय व्यक्तित्व की अभि व्यक्ति है। यद्यपि कबीरवाणी का अधिकांश अध्यात्म केन्द्रित है किन्तु तद्समय समाज भी उनकी दृष्टि से ओझल नहीं रह पाया है।

उद्देश्य– कबीर ने अभिव्यंजना शैली शक्तिशाली है। जिस प्रकार उनकी दृष्टि में तीक्ष्णता तथा तीव्रता थी, उसी प्रकार उनकी अभिव्यंजक प्रतिभा भी प्रखर थी। वे युगद्रष्टा कवि थे। वे विशुद्ध मानवतावादी थे। वर्तमान में हम जिनता भी कबीर को पढ़ते हैं कबीर निकट से निकटतम प्रतीत होते हैं। वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता अधिक बढ़ गई है। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक कबीर छाए हुए हैं। जनमानस को कबीर के विविध आयामों से परिचित कराना ही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर की धार्मिकता– महाकवि कालिदास जी कहते हैं : 'संत वह है जो सत्य खण्डों से परिचित हो। जीवन की अनुसंधानशाला में सत्य व असत्य का शोध करके सत्य को समाज में प्रेषित करने वाला हो।''

वर्तमान में निर्गुणोंपासको को संत की संज्ञा दी गई है। इस धारा के प्रमुख संत कबीर हैं। वे काव्याकाश के दैदिप्यमान नक्षत्र हैं। वर्तमान अध्यात्म और साहित्य चिन्तन कबीरदास की चर्चा के बिना अधूरा है। भारतीय धर्म साधना के इतिहास में कबीर महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि हैं। कबीर का चिंतन आज भी भारतीय समाज के जनजीवन के अंतर्मन में व्याप्त है। कबीर द्वारा स्थापित उच्च और श्रेष्ठ जीवनमूल्य समाज के लिए मानक है। कबीर का जन्म 1398 ई0 में ऐसे समय हुआ जब देश में धर्म, जाति, मत सम्प्रदाय का बोलबाला था। वे राम–राम जपा करते थे और कभी–कभी माथे पर तिलक भी लगा लेते थे। इससे सिद्ध होता है उस समय स्वामी रामानन्द का खूब प्रभाव था।

''ऐसा प्रसिद्ध है कि एक दिन वे एक पहर रात रहते ही उस (पंचगंगा) घाट की सीढ़ियों पर जा पड़े जहाँ से रामानन्द जी का पैर कबीर पर पड़ा। रामानन्द जी बोल पड़े राम–राम कह। कबीर ने इसे ही गुरूमंत्र मान लिया।'1

''कबीर ने निर्गुण ब्रम्हा के प्रचार के लिए विभिन्न प्रान्तों का भ्रमण किया जिससे उनकी भाषा में विभिन्न क्षेत्रों की बोलियों के पुट मिलते हैं। इसी कारण उनकी भाषा सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी कहलाती हैं।''2

कबीर राम नाम का स्मरण करते हैं किन्तु वे संत प्रदर्शन, ढोंग आदि के विरोधी थे। उनके राम साकार राम नहीं थे उनकी दृष्टि में मानसिक जप ही सच्चा भगवत् स्मरण है। वे अजपाजाप को श्रेष्ठ मानते हैं।

''माला फेरत जुग गया। फिरा न मन का फेर।

कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।3

वे राम की निर्गुण रूप में स्वीकृति देते है। निराकार राम में उनका पूर्ण विश्वास है निर्गुण राम की उपासना का संदेश देते हुए वे कहते हैं–'' निर्गुण राम जपो रे भाई।'' ब्रम्ह जीव जगत आदि तत्वों का निरूपण उन्होंने भारतीय अद्वैतवाद के अनुसार किया है।'' 4

कबीर का समाज दर्शन– हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल घोर बिसंगतियों का काल था। उस समय मुस्लिम शासकों के अत्याचार से जनता त्रस्त थी। सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों का बोलबाला था। अशिक्षित भोली भाली हिन्दू जनता धर्माचार्यों के कुचक्र में पड़कर रोटी–बेटी सब कुछ गंवा रही थी। ऐसी विषम परिस्थित में कबीर का अपविर्भाव हुआ। उन्होंने समाज की बुराइयों को

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

दूर किया। राम रहीम के नाम पर चल रहे पाखण्ड पर करारा प्रहार किया। उन्होनें धर्म के ठेकेदार ढोंगी साधुओं मुल्ला– मौलवियों को भी फटकार लगाई।

यथा– हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुरक कहे रहिमाना।

दोउ आपस में लरि–लरि मुए, मरम न काहू जाना।।5

जनमानस दर–दर मंदिरों में ईश्वर खोज रहे थे। कबीर ने समझाया कि ईश्वर एक है वह हमारे हृदय में वसता है उन्होंने साफ कहा–

''कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूँढे मन माँहि।

ऐसे घटि–घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहि।।''6

धर्म के नाम पर व्याप्त हिंसा का भी वे कड़े शब्दों में विरोध करते हैं। हिन्दुओं में शाक्त धर्म के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती थी और मुसलमानों में कुर्बानी के नाम पर पशुबलि प्रचलित थी। कबीर ने मंतव्य दिया–

''बकरी पाती खात है ताकी काढ़ी खाल।

जो नर बकरी खात है तिनको कौन हवाल।।'' 7

मूर्तिपूजा का भी उन्होनें डटकर विरोध किया–उन्होंनें बताया मूर्ति में भगवान नहीं मिलते। उदाहरण–

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।

घर की चाकी कोई न पूजै पीसि खाय संसार।। 8

कबीर की भक्तिभावना – कबीर भक्तिकाल की निर्गुणधारा के प्रतिनिधि कवि हैं तथापि उन्होने अपने काव्य में भक्ति का समावेश किया है। भक्ति भाव के लिए द्वैत आवश्यक है जबकि कबीर निर्गुण, निराकार के उपासक हैं जिसमें द्वैत के स्थान पर अद्वैत का महत्व है यही कारण है कि उनकी भावना सूर तुलसी जैसी नहीं है। कबीर ने नाथ पंथियों की हठयोग साधना में भक्ति का समावेश करके उसे सरसता प्रदान की है।

कबीर भक्ति को भवसागर तर जाने का साधन मानते हैं–

यथा – '' जब लगि भाव भगति नहिं करिहौ।

तब लगि भवसागर क्यों तरिहौ।।''

उन्होंने राम के निर्गुण निराकार स्वरूप को स्वीकारा और वे उनके सच्चे भक्त थे। वे पहले भक्त हैं फिर कवि । कबीर की भक्ति आध्यात्मिक कोटि की है। जहाँ ज्ञान और भक्ति अभिन्न हो जाते हैं। कबीर के राम कण–कण में रमण करने वाले हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर की भक्ति में माधुर्य भाव दृष्टिगोचर होता है। सूफी संत कवियों के अनुसार कबीर ब्रम्हा राम को पति मानते थे और स्वयं को उनकी पत्नी या बहुरिया कहते थे। यह रूप दाम्पत्य प्रेम को प्रकट करता है। नारद भक्ति सूत्र में बताया गया है कि माधुर्य भाव में लीन व्यक्ति को प्रिय से तनिक भी विछोह असहय होता है। माधुर्य भक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत है।

''दुलहिनि गावहु मंगलाचार।

हम घर आए हो राजा राम भरतार।।9

माधुर्य भाव के अन्तर्गत कबीर की उन साखियों को भी लिया जा सकता है जिसमें जिवात्मा का परमात्मा के प्रति विरह भाव प्रकट होता है।

आँखें निरन्तर प्रिय की प्रतीक्षा करते थक चुकी है।

अंखड़ियाँ झाईं पड़ी पंथ निहारि–निहारि।

जीभड़ियाँ छाला पड़ा राम पुकारि–पुकारि।।10

उनकी भक्ति में दास्य भाव भी प्रकट होता है वे अपने स्वामी को 'गरीब नेवाज' अर्थात् दीनों पर दया करने वाला कहते हैं।

''जो सुख प्रभु गोविन्द की सेवा, सो सुख राज न लहियो।''

कबीर ने भक्त के लिए 'दास' शब्द का भी प्रयोग किया है

''दास कबीर जतन सो ओढ़ी जस की तस धर दीनी चदरिया।''

नाम स्मरण को भी कबीर ने अपनी भक्ति में स्थान दिया है वे अपने ईश को राम नाम से भी संबोधित करते हैं–

कबीर निर्भय राम जपु, जब लागे दीवा बाति।

तेल घटा बाती बुझे, तब सोवो दिन राति।।

कबीर भक्ति महिमा का गुणगान करते नहीं अघाते। भक्तिहीन जीवन को वे व्यर्थ मानते हैं। यथा–

''भगतिहीन जीवन कछु नाहीं।

उत्पति परिलै बहुरि समाही।।''

कबीर दर्शन– कबीर पर विभिन्न दर्शनों का प्रभाव भी देखने को मिलता है।। कबीर की सहज साधना पर कई धर्म दर्शनों के उदार तत्वों का प्रभाव था। कबीर ने हठयोग एवं कुण्डलिनी जागरण को सिद्धों नाथों से लिया। कबीर ने सिद्धों के पंचमकारों (मुद्रा, मदिरा, मैथुन, मत्स्य, मांस) के आध्यात्मिक अर्थ लिए। मुद्रा का अर्थ–ज्ञान, मदिरा का आध्यात्मिक जागरण, मैथुन का कुण्डलिनी जागरण व महाकुण्डलिनी से मिलन, मत्स्य का कुण्डलिनी जागरण व महाकुण्डलिनी से मिलन, मत्स्य

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

का कुण्डलिनी की गति व मांस का विषय वासनाओं से अर्थ लिया। सिद्वो, नाथों की भांति कबीर ने भी रूढ़ियों व शास्त्रीय पाण्डित्य का विरोध किया। यथा–

पण्डित और मसालची दोनों सूझे नाहिं।

औरन को करे चाँदना आप अंधेरे माहि।।''

नाथों सिद्धों की भाँति कबीर ने भी गुरू महात्म्य पर बल दिया–

''सतगुरू हमसे रीझि करि कह्या एक प्रसंग।

बरस्या बादल प्रेम का भीग गया सब अंग।।''

कबीर द्वारा वर्णित योगी सामान्य हठयोगी नहीं हैं वह उनके स्वानुभूतिमूलक सहज योग, की साधना करनेवाला सहजयोगी है।

''अवधू जोगी जग ते न्यारा।''

कबीरपंथी इसी शब्द–सुरति–योग को योग साधना की चरम परिणति मानते हैं। कबीर ने भी कहा है–

सहजै होय सो होय।

अर्थात् सहज योग वह साधना है जो सहज ही हो जाये।'

इसी अवस्था में आकर कबीर की योग साधना में भक्ति और योग का सुखद सम्मिश्रण हो जाता है। जिसको डॉ0 त्रिगुणायत ने प्रपत्तिमूलक योग कहा है।

उक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कबीर एक महान समाज सुधारक, हिन्दू– मुस्लिम एकता के पक्षधर क्रान्तिदर्शी विचारक थे। वे धार्मिक पााखण्ड, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, बाह्याडम्बर एवं मिथ्या आचरण के विरोधी थे और इन प्रवृत्तियों को समाप्त कर देने के पक्षधर थे। वे ऐसे निर्भीक और साहसी व्यक्ति थे जो घर फूँकने के लिए सदैव तत्पर थे।

वस्तुतः ऐसा व्यक्ति ही कोई क्रान्तिकारी कदम उठा सकता है। उनकी स्पष्ट उद्घोषणा थी–

'' कबिरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ।

जो घर फूँके आपना सो चले हमारे साथ।।''11

वे महान संत ही नहीं मानवता दृष्टिकोण वाले महामानव थे। उनकी प्रासंगिकता वर्तमान समाज में अधिक बढ़ गई है। उनके उच्च दर्शन के कारण ही प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक उनका विशेष स्थाान बना हुआ।

कबीरदास जी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सदा प्रेरणास्रोत रहेंगे। उस महान संत के अवदान को हम कभी नहीं भुला सकेंगे। सदियों तक जहान उनका ऋणी रहेगा।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1	शुक्ल आचार्य रामचन्द्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास (तृतीय संस्करण)	नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी + नई दिल्ली	संवत् 1999 पृ0 42
2	प्रजापति डॉ0 जगदीश प्रसाद	हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रवृत्तयात्मक अध्ययन	भवदीय प्रंकाशन	2002 पृ0 76
3	प्रजापति डॉ0 जगदीश प्रसाद	हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रवृत्तयात्मक अध्ययन	भवदीय प्रंकाशन	2002 पृ0 98
4	पूनिया डिम्पल एम0ए0 हिन्दी UGC Net कविता (एम0ए0हिन्दी, एम0एड)	UGC NET	अरिहन्त प्रकाशन	2022 पृ0 97
5	प्रजापति डॉ0 जगदीश प्रसाद	हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रवृत्तयात्मक अध्ययन	भवदीय प्रकाशन	2002 पृ0 98
6	दास श्यामसुन्दर	कबीर ग्रन्थावली आलोचना एवं व्याख्या साखी एव पद (चतुर्थ संस्करण)	हरीश प्रकाशन मन्दिर	2022 पृ0 50
7	दास श्यामसुन्दर	कबीर ग्रन्थावली आलोचना एवं व्याख्या साखी एव पद (चतुर्थ संस्करण)	हरीश प्रकाशन मन्दिर	2022 पृ0 55
8	दास श्यामसुन्दर	कबीर ग्रन्थावली आलोचना एवं व्याख्या साखी एव पद चतुर्थ संस्करण	हरीश प्रकाशन मन्दिर	2022 पृ0 58
9	प्रजापति डॉ0 जगदीश कुमार	हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रवृत्तयात्मक अध्ययन	भवदीय प्रकाशन	2002 पृ0 89
10	प्रजापति डॉ0 जगदीश प्रसाद	हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रवृत्तयात्मक अध्ययन	भवदीय प्रकाशन	2002 पृ0 89
11	मिश्र डॉ0 विमलेश कु0, मिश्र डॉ0 आनन्द	हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास एवं निबन्ध	नील कमल प्रकाशन	2005–2016 पृ0 11